धारणीय विकास
(Sustainable Development)

वर्तमान में धारणीय विकास सबसे ज्यादा प्रयोग किया जाने वाला शब्द है। इसका कारण आर्थिक संवृद्धि की अंधी दौड़ में वृहद् स्तर पर पर्यावरण का क्षरण एवं प्राकृतिक संसाधनों की कमी हो रही है। नवीनीकृत न हो पाने वाले संसाधनों के उपभोग का स्तर इतना अधिक है कि वे निकट भविष्य में अप्राप्य हो जायेंगे जिससे आगे आने वाली पीढ़ियों को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

धारणीय विकास की अवधारणा को सर्वप्रथम 1980 में इस समय प्रसिद्धि मिली जब 'इंटरनेशनल यूनियन फार द कंजर्वेशन ऑफ नेचर एंड नेचुरल रिसोर्सेज' द्वारा 'वर्ल्ड कंजर्वेशन स्ट्रेटजी' प्रस्तुत की गयी।

1992 में यूनाइटेड नेशंस कॉन्फ्रेंस ऑन एनवायरमेंट एंड डेवलपमेंट जिसे "अर्थ (Earth) समिट" भी कहा जाता है के विश्वव्यापी विमर्शों में धारणीय विकास की अवधारणा पर चर्चा एक मुख्य बिंदु था। धारणीय विकास की नीतियों एवं कार्यक्रमों के क्रियान्वयन हेतु एजेंडा 21 के रूप में कार्य योजना बनाई गयी। इसके अनुसार धारणीय विकास के तीन अंतर्निभर एवं परस्पर सुदृढ़ीकृत स्तंभ होते हैं —

(i) आर्थिक विकास
(ii) सामाजिक विकास
(iii) पर्यावरण विकास एवं संरक्षण

पर्यावरणीय विकास की परिभाषा –

वर्ल्ड कमीशन ऑन एनवायरमेंट एण्ड डेवलपमेंट (द ब्रटलैंड कमीशन) के अनुसार – भविष्य में आने वाली पीढ़ियों की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की योग्यता के विषय में समझौता किए बिना वर्तमान आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति पर्यावरणीय विकास है।

अतः "पर्यावरणीय विकास ऐसा विकास है, जिसके अंतर्गत सभी, विशेषकर बहुसंख्यक रूप से गरीबों की सेवाओं, खाद्य उर्जा, पानी एवं आवास जैसी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके तथा कृषि, निर्माण शक्ति एवं सेवाओं में वृद्धि सुनिश्चित की जा सके तथा इन आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

पर्यावरणीय विकास की प्रमुख विशेषताएँ

(1) यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें पर्यावरणीय, आर्थिक एवं सामाजिक संसाधनों का दोहन इस प्रकार किया जाता है कि वे पूर्णतया नष्ट न हो, बल्कि इनका भविष्य में नवीनीकरण करते हुए पुनः उपयोग किया जा सके।

(2) आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक समता एवं पर्यावरणीय गुणवत्ता पर ध्यान दिया जाता है।

(3) जीवन की गुणवत्ता को वर्तमान समय में तथा भविष्य में बनाए रखने का सामाजिक लक्ष्य होता है तथा जीवन की गुणवत्ता के प्रमुख पहलू – स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास एवं पर्यावरणीय संरक्षण होते हैं।

(4) इस अवधारणा में आर्थिक सामाजिक एवं पर्यावरणीय उद्देश्यों के मध्य संबंध स्थापित करने पर ध्यान दिया

जाता है तथा इनके मध्य संघर्ष को समाप्त करने का प्रयास किया जाता है।

(5) इन सरोकारों में समता मुख्य बिंदु होती है। जिसका तात्पर्य है – धनी एवं गरीब के मध्य, पीढ़ियों के मध्य तथा राष्ट्रों के मध्य विकास की संगत एवं लाभों का उचित वितरण।

धारणीय विकास के प्रमुख अंग –

(1) समावेशिता (Inclusiveness) – विकास के संदर्भ में पर्यावरणीय एवं मानव व्यवस्थाओं का समावेश करते हुए वर्तमान के उपभोगों एवं भविष्य की आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इसमें मानव जनित वैश्विक परिवर्तनों, जैसे – जनांकिय परिवर्तन, प्रौद्योगिकी परिवर्तन, आर्थिक संवृद्धि, व्यक्तियों की प्रवृत्तियों एवं व्यवहारों को भी प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के साथ-साथ देखा जाना चाहिए।

(2) संयोजकता (Connectivity) – किसी भी राष्ट्र को अपने आर्थिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सामाजिक एवं पर्यावरणीय लक्ष्यों को प्राप्त करना आवश्यक होता है।

(3) समता (Equity) – धारणीय विकास के लिए एक पीढ़ी के अंतर्गत तथा पीढ़ियों के मध्य संसाधनों एवं संपत्ति संबंधी अधिकारों के उचित बंटवारे पर बल दिया जाता है, ताकि अंतर-पीढ़ियों तथा अंतः ~~पीढ़ियों~~ पीढ़ीय समता को प्राप्त किया जा सके।

(4) सुरक्षा (Security) – प्राकृतिक पूंजी एवं पारिस्थितिकीय व्यवस्था को सामाजिक व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में सुरक्षित रखा जाए।

Scanned with CamScanner

(5) उपभोक्तावाद संस्कृति को बढ़ावा - वर्तमान पीढ़ी को संयम एवं नियम से जीवनयापन करने एवं आवश्यकता के अनुरूप संसाधनों के दोहन की प्रवृत्ति का विकास किया जाना धारणीय विकास का अंग है।

धारणीय विकास की प्रमुख शर्तें:-

(1) बिना किसी हस्तक्षेप के व्यक्तियों के जीवन में सुधार मात्र आर्थिक संवृद्धि होने से नहीं होता है।

(2) विकासशील देशों को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा हेतु मानवीय पूंजी एवं प्रौद्योगिकीय विकास में बहुतायत रूप से निवेश करना होगा।

(3) विकासशील देशों में विकास के लक्ष्यों एवं ढंगों में सामंजस्य या तालमेल होना आवश्यक है।

(4) प्रजातांत्रिक एवं कल्याण पर आधारित राजनीतिक व्यवस्था का होना।

(5) शिक्षा व्यवस्था का सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक होना।

(6) पारिस्थितिकीय असंतुलन के मूल्य पर समृद्धि एवं उत्पादन न होना।

(7) स्थानीय स्तर पर प्रौद्योगिकी का विकास एवं उपयोग।

(8) राजनीतिक अनिश्चितता न होना।

(9) अविकसित एवं विकासशील देशों में गरीबी मानव पतन, पारिस्थितिकीय असंतुलन के दुष्चक्र को पहचानना तथा इससे बाहर निकलने का प्रयास करना।

(10) विकसित देशों द्वारा अल्पविकसित राष्ट्रों को सहायता देना।

Scanned with CamScanner

classmate
Date
Page

धारणीय विकास के मूल्य –

(1.) मानवता एवं भूमि में एकता
(2) हिंसा में कमी
(3) पर्यावरण की गुणवत्ता बनाये रखना
(4) मानव सम्मान की अनुभूति
(5) विविधता एवं अनेकता के अस्तित्व को स्वीकार करना।
(6) सहभागिता को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार करना
(7) मानव अधिकार संरक्षण एवं सामाजिक न्याय की स्थापना।
(8) संसाधनों का न्याय संगत उपयोग।

धारणीय विकास के आयाम –

(1) पारिस्थितिकीय धारणीयता – गैर नवीकरणीय एवं अन्य संसाधनों का कम मात्रा के सुधारों एवं विकास के लिए दोहन न किया जाए।
(2) आर्थिक धारणीयता – गैर-नवीकरणीय संसाधनों पर आर्थिक विकास एवं सुधारों का निर्भर न होना।
(3) राजनीतिक धारणीयता – समाज में वर्तमान ~~सत्ता~~ अथवा उदीयमान शक्ति के वितरणों के अनुरूप परिवर्तनों का होना।
(4) सांस्कृतिक धारणीयता – समाज के केन्द्रीय मूल्यों, प्रतिमानों एवं परंपराओं के अनुरूप परिवर्तन होना।
(5) मानव धारणीयता – इसमें समान मानवता को आगे बढ़ाते हुए विकास, मानव-मूल्यों एवं पर्यावरणीय संरक्षण मूल्यों पर आधारित होना चाहिए।

Scanned with CamScanner